LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

ओ३म् चोदयित्री सूनृतानां चेतन्ती समुतीनाम्। यज्ञं दधे सरस्वती ।।

ऋग्वेद १/१/३/११

Om! Chodayitri sunritānām chetanti sumatinām. Yajyam dadhe saraswati.

Rig Veda 1/1/3/11

Glossaire / Shabdārtha :

Sunritānām – Une personne cultivée/éduquée dont la parole est suave, qui rejette le mensonge avec mépris, et ne pratique que la vérité, rien que la vérité par ses paroles et ses actions.
Chodayitri – qui nous mène vers la bonne voie, qui nous guide et nous inspire à adopter les bonnes manières, les attitudes positives et autres valeurs fondamentales.
Sumatinām - Un érudit ou un savant, une personne de capacité intellectuelle exceptionnelle.
Dadhe – préserver, maintenir, porter ou soutenir.
Chetanti – prévenir, avertir, ou conseiller à quelqu'un.
Yajyam - (a) Le rite sacré ou la cérémonie religieuse que l'on appelle yaj en Hindi et yajyam en sanskrit, pratiqué par les Hindous.
(b) Toutes les bonnes actions qui contribuent au bien-être de tout le monde.
Saraswati – (a) Une personne qui possède une connaissance infinie de l'univers, de plusieurs disciplines dans le domaine du savoir, de la spiritualité parfaite, des paroles sacrées et divines – leur implication et leur relation avec l'humanité.
(b) les bonne paroles et les conseils des sages, et la pratique régulière du yaj, du prānāyām, du yoga, et d'autres bonnes actions qui aident à l'épanouissement complet de l'individu.

Interprétation / Anushilan

Dans ce verset (mantra) du Rig Veda il y a beaucoup d'emphase sur la vie sublime et spirituelle que l'homme doit mener sur cette terre pour son salut, c'est-à-dire, pour atteindre le but ultime, la félicité éternelle (Moksha). Pour y arriver il faut qu'il transforme sa vie par l'acquisition d'une éducation saine, de sa culture à travers l'étude des Vedas et la pratique du yoga, des attitudes positives et de l'abnégation.

Tout homme éduqué et cultivé devient un être intègre, sage et magnanime. Il a une approche amicale envers tout le monde. Il est tout le temps calme, posé et serein.

Ainsi, il se fait beaucoup d'amis partout où il va et il inspire le respect de tout le monde.

Il ne pratique pas la malhonnêté, le mensonge, l'irrespect, la perfidie, la tricherie, la violence, l'injustice et autres préjudices. Il le sait pertinemment bien qu'un comportement pareil l'éloignera du Seigneur et le mènera vers la décadence.

De ce fait il ne pratique que la vérité. Toutes ses paroles et ses actions sont basées toujours sur la vérité. Il ne froisse jamais la susceptibilité de quiconque.

Le Seigneur est toujours avec lui. Il jouit de la bénédiction et de la protection divines. Il est gratifié de plusieurs vertus, d'une grande capacité intellectuelle, de la clairvoyance et d'une connaissance infinie de l'univers. Conséquemment, il devient un savant voire un saint (Rishi) car il entretient toujours des pensées sublimes dans son esprit. Son cœur est aussi pur et sacré que l'autel d'un temple où demeure son âme et où le Seigneur tient à être présent.

Un tel homme est digne d'être notre Gourou / notre maître. C'est lui seul qui pourra nous transmettre la vraie connaissance et peut nous guider dans la bonne voie vers le but-ultime de la vie qui est la félicité éternelle. Une personne pareille est connue comme 'Saraswati' dans les Vedas et par les sages.

Dans le même contexte de ce verset du Rig Veda on nous fait comprendre que pas seulement un intellectuel mais aussi un croyant analphabète (un illettré), de par sa foi inébranlable en Dieu, ses prières, sa dévotion, ses sacrifices et ses bonnes actions peut aspirer à atteindre ce but. Il doit toujours espérer dans sa vie car il ne sera pas ignoré. Il sera certainement béni par le Seigneur et par sa grâce il pourra même atteindre le Bonheur Suprême (Moksha / Param – ānand).

N. Ghoorah

दयानन्द का समकालीन समाज

सत्यदेव प्रीतम,सी.एस.के,आर्य रत्न - उपप्रधान आर्य सभा मॉरीशस

जब दयानन्द ने गुरु विरजानन्द को वचन दे दिया कि भारत को अज्ञानता के अन्धवार से निकालकर ज्ञान का प्रकाश फैलायेगा तो उनके दिमाग में वेद का ज्ञान था। उन्होंने सुना था कि जब वेद का ज्ञान भारत वर्ष में फैला था तो भारत दुनिया का गुरु कहलाता था और उन्होंने देखा कि आज गुरु क्या शिष्य कहलाने लायक नहीं था।

दयानन्द के सामने घनघोर जंगल था उसको साफ़ करना था। पर कैसे साफ़ किया जाय। जिधर दृष्टि पात करते उधर सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक नैतिक एवं आर्थिक विकृत्तियाँ दिखाई देतीं - कुछ ऐसी ही विकृतियाँ व विषमताएँ गिनाते हैं-

१. बीढ़ी और सिगरेट-भांग और तरह तरह के नशीले पदार्थों का शिकार बनी थीं जनता।
२. ऐसा कहा जाता है और सत्य भी जंचता है कि भारतीय जनता के केवल २% लोग पढ़े-लिखे थे।
३. उस २% लिखे पढ़े लोगों में महिलाओं की संख्या नगन्य थी। लड़कियों को स्कूल भेजना निषेध था, स्त्रियों को पैर की जूती समझा जाता था।
४. बाल विवाह चरम सीमा पर था-परिणाम स्वरूप बाल-विधवाओं की सीमा नहीं थी।
५. वृद्ध और अनमेल विवाह धड़ा धड़ हो रहा था।
६. जन्म के नाम पर जाति प्रथा ने समाज में जड़ जमा ली थी।
७. धर्म परिवर्तन से देश में विधर्मियों की संख्या आसमान को छू रही थी।
८. वर्ण आश्रम अव्यवस्था छायी हुई थी।
९. मूर्ति पूजा से तत्कालीन समाज में विकृति आ गयी थी। विधर्मियों द्वारा मूर्तियाँ तोड़ी जा रही थी। पूजा स्थानों को तोड़कर विधर्मी लोग अपने पूजा स्थान का निर्माण कर रहे थे।

शेष भाग पृष्ठ २ पर

सम्पादकीय

नव वर्षोत्सव

समय के आधार पर २०१४ का वर्ष तो समाप्त हो गया और २०१५ का नूतन वर्ष आरम्भ हो गया। हम सभी देशवासियों ने बड़े हर्षोल्लास के साथ नव वर्षोत्सव मनाया। अपने रिश्तेदारों, सखा-सम्बन्धियों के लिए मंगल-कामना प्रस्तुत की, उन्होंने भी सहर्ष हमें नूतन वर्ष की शुभ-कामना भेजी। समय की गति अनुकूल बारह महीनों बाद यह नया वर्ष भी समाप्त हो जाएगा और फिर से नव वर्ष का स्वागत किया जाएगा, यही है गतिमान समय का चक्र।

काल, परिस्थिति अनुसार विश्व में परिवर्तन होता रहता है। देश के जलवायु और वातावरण में बदलाव होता रहता है। आज से बारह महीने पूर्व जिस स्थिति में मॉरीशस था, आज उस स्थिति में नहीं है। बदलते समय के साथ मौसम बदलता गया और परिस्थिति में भी सुधार होता गया। हमारी यही कामना है कि इस वर्ष भी हमारा देश हर प्रकार की चुनौतियों का सामना करता हुआ प्रगति के पथ पर अग्रसर होता जाएगा।

आज हमारे देश में नई सरकार और नये साल का खुशहाल माहौल छाया हुआ है। गत १० दिसम्बर के आम चुनाव में देश की जनता ने मतदान देकर पुरानी सरकार का सफ़ाया किया और नई सरकार स्थापित की। इस नई सरकार के सामने भी कई प्रकार की समस्याएँ हैं। हम सभी नागरिकों को एक दूसरे के प्रेम, एकता और सहयोग से देश की समस्याएँ दूर करने में मददगार बनना चाहिए, ताकि राष्ट्रीय उत्थान हो सके।

श्रेष्ठ, परिश्रमी, तपस्वी, त्यागी, धार्मिक, समाज-सेवी, परोपकारी और विद्या प्रेमियों से एक उत्तम परिवार बनता है। उत्तम परिवारों से संगठित समाजों का निर्माण होता है । सामाजिक उत्थान होने से सभी नागरिकों का भला होता है। और समस्त देश वासियों के एकता-बल से राष्ट्र उन्नतिशील होता है। सभी मॉरीशस वासी अगर समय का पूरा सदुपयोग करते हुए तप-त्याग द्वारा यह साल गुज़ारते जाएँगे तो यह नूतन वर्ष हमारे लिए नया रंग लाएगा । हमारी यही मंगलकामना है कि नई सरकार के सभी सत्ताधिकारी बड़ी तन्मयता, सूझ-बूझ और तप-त्याग के साथ बड़ी देश-भक्ति द्वारा इस देश की जनता का उद्धार करेंगे ।

एक राष्ट्र की आर्थिक क्षमता के आधार पर ही देश का उत्थान निर्भर होता है। समस्त औद्योगिक धंधों तथा व्यवसायों आदि का संचालन होता है, बेकारों को जीविका मिलती है। इसी उद्देश्य से हमें कड़ी मेहनत करके अपने जीवन का सुधार करना चाहिए, तभी हम समय के साथ आगे बढ़ते जाएँगे।

हम ईश्वर से प्रार्थना करें कि हमारे देश के सभी धार्मिक, सामाजिक और राष्ट्रीय पुरुष बड़े ही उत्साह पूर्वक अपने धर्म, संस्कृति, भाषा, समाज और देश के उत्थान में समर्पित हो, ताकि हम एकमत होकर सबके हितैषी बनें।

परमपिता परमात्मा की ऐसी कृपा हो कि हमारे देश में तूफ़ान, बाढ़, अनावृष्टि, संक्रामक रोग, आदि प्राकृतिक प्रकोप न हो। साल भर किसी प्रकार की संकटकालीन स्थिति उत्पन्न न हो, जिन कारणों से हम दुखित और पीड़ित हो।

हमारी यही आशा है कि हमारे देश के सभी नागरिक शुद्धाचार, सद्व्यवहार, कर्मनिष्ठ और सात्विक विचारों के साथ अपना जीवन व्यतीत करेंगे। नूतन वर्ष सभी के लिए मंगलमय हो और मकर संक्रान्ति आनन्दमय।

बालचन्द तानाकूर

पृष्ठ १ का शेष भाग

१०. सम्पूर्ण भारतीय जनता डरी हुई थी। त्राहि-त्राहि मची हुई थी।
११. वेदों का नाम मात्र रह गया था। कहा जाता था राहु और केतु ने वेदों को ग्रस लिया था।
१२. यूरोपियन लोग जैसे चाहें तैसे वेदों का अर्थ कर रहे थे। जो चन्द भारतीय लोग थे। वे भी यूरोपियनों के स्वर में ही स्वर मिलाकर राग अलाप रहे थे।
१३. आर्य शब्द किस चिड़िया का नाम है किसी को मालूम नहीं था।
१४. यूरोपवासी भारत के सभी धन जहाज भर भर कर अपने देश ले जा रहे थे।

ऐसी स्थिति में आकर स्वामी दयानन्द को काम करना कोई सहज बात नहीं थी। पर स्वामी दयानन्द साधारण मरण धर्मा नहीं थे। उनमें तो अलौकिक दिव्य ज्ञान था। जैसे सूरज तिमिर में फंसे हुए लोक को आलोकिक करता है वैसे ही देखते-देखते स्वामी दयानन्द ने भारतीय समाज को आलोकित करना आरम्भ किया। इसलिए आज उनके गुण-गान करते अघाते नहीं। धन्य है दयानन्द तू ने हमें जगा दिया। उनके द्वारा फैलाये हुए आलोक/प्रकाश ने भारत की सीमा लांघकर सात समुन्दर पार देश-देशान्तर और द्वीप द्वीपान्तर में सत्य अर्थ का प्रकाश फैला दिया।

आचार्य राजसिंह न रहे

दिल्ली प्रादेशिक आर्य सभा के पूर्व प्रधान श्रद्धेय आचार्य राजसिंह का अचानक देहावसान हो गया। वे बाल ब्रह्मचारी थे। जब से अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन रखना शुरू किया गया वे सर्वत्र अपनी उपस्थिति देकर केवल कार्य की शोभा नहीं बढ़ाते बल्कि सम्मेलन को सफल बनाने का पूरा प्रयास करते थे। वे उच्च कोटि के भाषण तो देते ही थे। इसके उपरान्त कार्य का संचालन बहुत ही सफलता पूर्वक करते थे।

चित्र में श्री राजसिंह जी मेरी दायीं ओर है

मोरिशस में जब पिछले दिनों विश्व आर्य महासम्मेलन हुआ था तो श्रद्धेय विनय आर्य और सार्वदेशिक आर्य सभा दिल्ली के महामंत्री के साथ सम्मेलन से कुछ पूर्व ही आ गये थे ताकि सम्मेलन का शुभारम्भ ठीक से हो सके। वे कभी आसन्न जमाकर मंच पर बैठते नहीं थे। उन्हें चिन्ता बनी रहती कि कार्य में कोई अड़चन न आन पड़े।

गत साल जब नवम्बर १, और ८ को सिंगापुर और ८, ९ नवम्बर को थाईदेश में सम्मेलन लगा तो विश्व सम्मेलन में अपनी अन्तिम भूमिका निभायी। हमने कभी स्वप्न में नहीं सोचा था कि उनका अंतिम दर्शन कर रहे थे।

जनवरी २०१४ में जब मैं भारतीय प्रवासी दिवस में भाग लेने गया था तो एक रविवार को पूरा दिन हमें उनके साथ रहने का मौका प्रदान किया था। विनय आर्य और उनके चन्द साथी रात्रि भोज भी दिल्ली के एक उच्च स्तर होटल में किया था। आदमी इस दुनिया में मुसाफिर है। आते हैं जाते हैं पर यादें छोड़ जाते हैं।

Rishi Dayanand Institute

Enrolment of Students in the Academic Year 2015-2016

Applications are invited from suitably qualified candidates for enrolment o undergraduate programmes in affiliation with Open University of Mauritius in Academic year 2015/2016 due to start in January 2015.

Full time Courses
Lectures:- 09:00 to 16:00

Part time Courses
16:30 to 19:30 Weekdays
09:00 to 16:00 Saturdays

Programme

- BSc (Hons) Business Management with specialization in either Human Resources/ Marketing/ Tourism Management/Financial Services / Risk Management/ Investment/ Taxation/ Real Estate
- BSc (Hons) Entrepreneurship

Duration

Normal Degrees 3 Years
Maximum 6 Years

Apply now

Closing Date : End of January
Contact : Avenue Michael Leal, Pailles, Tel / Fax : 286 1159

धर्म विज्ञान (Theology) की पढ़ाई

इच्छुक छात्र-छात्राओं को विदित हो कि शनिवार १७ जनवरी से 'धर्म वाचस्पति' एवं 'शास्त्री' परीक्षाओं की पढ़ाई 'ऋषि दयानन्द संस्थान' माइकेल, लील लेन, पाई में प्रारम्भ हो गई है ।

अर्हताएँ

'धर्म वाचस्पति' के लिए वही छात्र/छात्राएँ अपना आवेदनपत्र भेज सकते हैं, जो 'धर्म रत्न', 'विद्या वाचस्पति' अथवा 'सिद्धान्त वाचस्पति' परीक्षा में उत्तीर्ण हों ।

'शास्त्री' में वही छात्र/छात्राएँ प्रवेश पा सकते हैं, जो 'धर्म वाचस्पति' अथवा बी.ए. परीक्षा में पास हों।

आवेदन भेजने की अन्तिम तिथि ३१ जनवरी २०१५ है ।

पता : रेशमा सुकर
माइकेल लील लेन
पाई
फोन नं० ५७६०११०५ अथवा ५२५७२६९४

विशेष जानकारी प्राप्त करने के लिए गुरुवार अथवा शनिवार को ११.०० से ४.०० बजे तक ऋषि दयानन्द संस्थान, पाई आ सकते हैं ।

प्राकृतिक चिकित्सा जीवन जीने की कला है

डॉ० विनय सितिजोरी, बी.ए.सी.एम, बी.ए.मे.सी.

प्राकृतिक चिकित्सा जीवन जीने की कला है। भारतीय जीवन प्रणाली जीवन का सिद्धान्त, सदियों पहले बताए गये नियमों के पालन करने से, बीमारियों से बचाती आयी है। प्राकृतिक चिकित्सा के नियम हैं जैसे दिनचर्या, ऋतुचर्या का पालन करके मनुष्य स्वास्थ्य का अनुभव कर सकता है। सुबह से शाम तक की दिनचर्या व्यतीत करने के ये नियम हैं।

भारतीयों का दिन सुबह चार बजे ब्रह्ममुहूर्त में शुरु होता है। याने सवेरे सूर्योदय से पहले जागना-उठना उचित है। नीम-बबूल, तुलसी, अनार-छिलके आदि वनस्पितियों से तैयार दाँत मंजन से दाँत साफ़ करना चाहिए।

उषापानः- सुबह २०० से ४०० मिलीटर- दो-तीन गिलास शुद्ध जल पीना चाहिए। यह स्वास्थ्यकारक है। यह शरीर से विषैल तत्वों को निकालने में मदद करता है। ऋतुओं के अनुसार दिन भर पानी की मात्रा बदल सकती है। सुबह खुली हवा में घूमना, व्यायाम करना, योगाभ्यास, प्राणायाम करना, सर्वांग मालीश करके स्नान करना। प्रकृति के अनुसार ऋतु-अनुरूप तेल उपयोग में लाना चाहिए। सर्वांग स्नान के बाद ईश्वर स्मरण, यज्ञ, हवन, उपासना, यहाँ से दैनिक दिनचर्या शुरू होती है। व्यवसाय के अनुकूल शारीरिक एवं बौद्धक श्रम होते हैं। आजकल समयाभाव के कारण शारीरिक श्रम कम होते हैं। पोषण के लिए जिस तरह संतुलित सुपाच्य आहार जरुरी है, उसी तरह पाचन के लिए, शरीरस्थ संस्थानों, कोशों में उसके पाचन के लिए व्यायाम जरूरी है। दिन भर की शारीरिक एवं मानसिक थकान के बाद शरीर और मनको विश्राम चाहिए। सायं संध्या-प्रार्थना और भोजन के बाद रात्रि में ९ से १० बजे तक सोना, तथा सुख की नींद लेना आवश्यक है। इस तरह दिन क्रम चलाना से बीमारी पैदा नहीं होगी, शरीर एवं मन का पोषण अच्छा होगा और सात्विक प्रवृतियों का निर्माण होगा।

चरन् वै मधु विन्देत चरन् स्वादुमुदुम्बरम् ।।

ऐतरेय उपनिषद्

जो परिश्रम करता है वह उसके फलस्वरूप उत्तरोत्तर सुखों का उपभोग करता है ।

On the occasion of the National Youth Day celebrated in India on the birthday of Swami Vivekanand on 12th January each year an incident that occurred in his life is being related for the members of the Mauritius Arya Yuvak Sangh in particular. I sincerely wish that they derive a lesson from it.

अपनी भाषा पर गर्व

एक बार स्वामी विवेकानन्द विदेश गए जहाँ उनके स्वागत के लिए कई लोग आये हुए थे उन लोगों ने स्वामी विवेकानन्द की तरफ हाथ मिलाने के लिए हाथ बढ़ाया और इंग्लिश में कहा जिसके जवाब में स्वामी जी ने दोनों हाथ जोड़कर नमस्ते कहा.... उन लोगों को लगा की शायद स्वामी जी को अंग्रेजी नहीं आती है तो उन लोगों में से एक ने हिंदी में पूछा आप कैसे ऐसे हैं?? तब स्वामी जी ने कहा आई एम् फ़ाईन थैंक यसके

उन लोगों को बड़ा ही आश्चर्य हुआ उन्होंने स्वामी जी से पूछा की जब हमने आपसे इंग्लिश में बात की तो आपने हिन्दी में उत्तर दिया और जब हमने हिंदी में पूछा तो आपने इंग्लिश में कहा इसका क्या कारण है ??

तब स्वामी जी ने कहा.....जब आप अपनी माँ का सम्मान कर रहे थे तब मैं अपनी माँ का सम्मान कर रहा था और जब आपने मेरी माँ का सम्मान किया तब मैंने आपकी माँ का सम्मान किया।

यदि किसी भी भाई बहन को इंग्लिश बोलना या लिखना नहीं आता है तो उन्हें किसी के भी सामने शर्मिंदा होने की जरुरत नहीं है बल्कि शर्मिंदा तो उन्हें होना चाहिए जिन्हें हिंदी नहीं आती है क्योंकि हिंदी नहीं ही हमारी राष्ट्र भाषा है हमें तो इस बात पर गर्व होना चाहिए की हमें हिंदी आती है.....

क्या आपने किसी देश को देखा है जहाँ सरकारी काम उनकी राष्ट्र भाषा को छोड़ कर किसी अन्य भाषा या इंग्लिश में होता हो.... यहाँ तक की जो भी विदेशी मंत्री या व्यापारी हमारे देश में आते हैं वो अपनी ही भाषा में काम करते हैं या भाषण देते हैं फिर उनके अनुवादक हमें हमारी भाषा या इंग्लिश में अनुवाद करके समझाते हैं... जब वो अपनी भाषा नहीं छोड़ते तो हमें हमारी राष्ट्र भाषा को छोड़कर इंगिलश में काम करने की क्या जरुरत है.....

Dr. J. Lallbeeharry

THREE INTERNATIONAL AWARDS TO INDRADEV BHOLAH INDRANATH

"Aim to be honoured, you should try to accomplish of what you pretend."
-Socrates

Indradev Bholah Indranath, Hon. President of Hindi Lekhak Sangh, Mauritius is world widely known as a prolific Hindi writer, poet and historian. Owing to his proficiency of undelible research work and creative writings in literature he has received three International Awards.

The Vikram Sheela Hindi Vidya Peeth and the Abhiyudaye Sanstha Vardha India, have conferred the most coveted titles of Doctorate, Saraswat Vidya Vachaspati and Vishwa Hindi Saraswati Samman. Too recently the dedicated Sanstha of literature, culture and arts. The "Bhartiya Vangmaye Peeth" Kolkota, India, has honoured him conferring the title of "Vishwa Hindi Shiromani Saraswat Samman".

In the Samman-Patra it has thus been written –

"यशस्वी डॉ इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ, अध्यक्ष, हिन्दी लेखक संघ मॉरीशस को आपकी हिन्दी साहित्य सेवा-साधना, समर्पण एवं हिन्दी साहित्य में आपके महत्वपूर्ण योगदान के उपलक्ष्य में भारतीय वाङ्मय पीठ, साहित्यिक संस्था आपको विश्वहिन्दी शिरोमणि सारस्वत सम्मान (मानद उपाधि) से विभूषित कर आपके समृद्ध भविष्य की अन्यतम कामना करती है।"

प्रो० डॉ. अभिजीत भट्टाचार्य (संयोजक) प्रो० श्यामलाल उपाध्याय मंत्री भारतीय वाङ्मय पीठ

It's a honour that Dr Indradev Bholah Indranath is a Arya Samajist. He is the Secretary of Aryodaye Press and Publication Committee. He is also inspector and examiner of Arya Samaj evening and Saturday Hindi Schools since over a half century. His magnum opus book "Arya Samaj and Hindi in world context" is unique, containing the full fledge history of Arya Samajs of Mauritius, India, South Africa, America, England, Scotland, Holland, New Zealand, Canada, Burma, Fiji, Trinidad, Nepal, Shri Lanka, Singapore and Arab Countries.

Dr. Indranath is the author of 12 books. His book 'Gagar mein Sagar' containing his 2,244 Haika Poems is exceptional which won him international fame. His new book 'Baba Mun Ki Ankhen Khol' a collection of 25 illustrated stories has just appeared.

AUM

GRAND PORT ARYA ZILA PARISHAD

CALENDAR OF ACTIVITIES – 2015

Month	Time	Activity	Samaj
January			
11.01.15	10.00	Vidyarambh Yajna	All Arya Samaj
15.01.15	16.00	Makar Sankranti	Mahebourg Arya Samaj
19.01.15	13.00	Brainstorming with Purohits	Vedic Centre
04.01.15	13.00	Workshop - Teachers & Managers	Vedic Centre
		Parivarik Yaj -- L.Ramdonee Family	**Bois des Amourettes**
February			
01.02.15	09.00	Blood Donation &Free Medical Check Up	Rose Belle Market
14.02.15	13.00	Maharshi Dayanand Jayanti	T/ Boutiques Arya Samaj
17.02.15	19.00	Rishi Bodh Diwas-(Three Day-National Programme)	Vedic Centre
28.02.15		**Parivarik Yaj -- D.Reejhaw_**	**Vieux Grand Port**
March			
06.03.15	09.00	Holi-Phag Utsav-Yajna	All Samajs
12.03.15	08.30	Rashtra Diwas-- Yajna	All Samajs
18-20.03.15	**15.00**	**Nav Samvatsar & Arya Samaj Sthapna Diwas (Mahayajna)**	**Ved Bhawan, L`Escalier**
28.03.15	16.00	Ram Nawmi	Gros Billot Arya Samaj
22.03.15	15.00	**Parivarik Yaj-Rungoo family**	**Plaine Magnien**
April			
08.03.15	10.00	Mahila Sammelan	Mahebourg Arya Samaj
19-21.04.15	08.00	Youth Camp (Yuva Shivir)	Vedic Centre, Arya Samaj
22.04.12	14.00	Mahatma Hansraj Jayanti	Mare d`Albert Arya Samaj
25.04.12	14.30	**Parivarik Yaj-Padaruth family**	**Bois des Amourettes**
May			
10.05.15	13.00	Workshop – Mahila Samaj	Trois Boutiques Arya Samaj
27.05.15	13.00	Workshop for Samaj Leaders	Vedic Centre
12.05.15	16.00	**Parivarik Yaj-Bissessur family**	**Petit Sable**
June			
07.06.15	14.00	Memorial Lecture-Sathyarth Prakash	Mahebourg Arya Samaj
12-14.06.15	15.00	Satyarthprakash Jayanti(Mahayaj)	La Sourdine Arya Samaj
17.06.15	14.00	Satyarthprakash Jayanti	Carol Village
14.06.15	13.30	Satyarthprakash Jayanti	Bois des Amourettes Arya Samaj
		Parivarik Yaj-Mungroo Family	**Mare d'Albert**
July			
19.07.15	14.00	Sangeet Sammelan	Plaine Magnien Arya Samaj
		Parivarik Yaj-Pauhaloo family	**Carreau Accacia**
		Parivarik Yaj-Pt S. Daiboo family	**Riv. des Creoles**
August			
01.08.15	15.00	Shravani Upakarma	Trois Boutiques Arya Samaj
27/29.07.15	08.00	Youth Camp (Yuva Shivir)	Vedic Centre
02.08.15	08.00	Shravani- Purnahuti	Bois des Amourettes AS
		Parivarik Yaj - Pt G. Chotoree family	**Riv. des Creoles**
		Parivarik Yaj- D.Gangoo family	**Mahebourg**
September			
05.09.15	16.00	Krishna Janmashthami	La Sourdine Arya Samaj` Riv des Creoles Arya Samaj
07-13.09.15	08.00	Shravani-Purnahuti(7days Mahayaj)	P/Magnien Arya Samaj
13.09.15	10.00	Brainstorming-Samaj Leaders	Mahebourg Arya Samaj
27.09.15	13.00	Mahila Samelan	P/Magnien Arya Samaj
		Parivarik Yaj_Pta S. Hurdayal	**Petit Bel Air**
October			
10.10.15	14.00	Guru Virjanand Nirvaan Diwas	Vedic Centre
25.10.15	19.00	Sangeet Sammelan	P/Magnien Arya Samaj
		Parivarik Yaj	**Trois Boutiques**
		Parivarik Yaj	**Mahebourg**
November			
01.11.15	13.00	Jila Samiti Varshgant/ Apravasi Diwas	Mahebourg Arya Samaj
08.11.15	16.30	Rishi Nirvaan Divas/Deepavali	Mahebourg Arya Samaj
25.11.15	08.30	Ganga Snaan-Yajna	Blue Bay, La Cambuse & Le Bouchon
		Parivarik Yaj-K. Gungadin family	**Providence, Bois des Amourettes**
December			
25_28.12.15	08.00	YouthCamp (Yuva Shivir)	Vedic Centre Arya Samaj
23.12.15	13.00	Shradhanand Balidaan Divas, Vidya Divas & Annual Get-Together	Vedic Centre Arya Samaj
		Parivarik Yaj-Pt P. Ramdonee	**La Rosa, New Grove**

सामाजिक गतिविधियाँ

एस. प्रीतम

यज्ञ की पूर्णाहुति

सप्ताहान्त २७, २८ दिसम्बर २०१४ को श्रीमान् और श्रीमती रामचरण ने अपने विवाह की स्वर्ण जयंती के उपलक्ष्य में एक द्विदिवसीय अथर्ववेदीय यज्ञ का अनुष्ठान किया था। उसकी पूर्णाहुति रविवार को सम्पन्न हुई। उस समारोह में वर्तमान नवनिर्वाचित सरकार के दो मन्त्री उपस्थित थे।

मंत्री माननीय पृथिवीराजसिंह रूपन, मंत्री राज दयाल, सी.एस.के., पी.डी.एस.एम. और क्यू.पी.एम.। आर्य सभा का प्रतिनिधित्व करते हुए – प्रधान श्री बालचन्द तानाकूर उपप्रधान डा० उदयनारायण गंगू और सत्यदेव प्रीतम । दूर-क़रीब के आर्य समाजियों से मार लाशो आर्य मंदिर खचाखच भरा था।

लोग अपने जन्मदिन या विवाह की वर्षगाँठ या तो अपने परिवार के सीमित दायरे में मनाते हैं या अपने स्थानीय समाज के सभासदों के बीच मनाते हैं। पर रामचर्ण परिवार ने स्वर्ण जयन्ती परिवार व समाज के क्षेत्र को टप कर प्रान्तीय स्तर पर मनाया और न केवल आर्य सभा के प्रतिनिधियों को आमंत्रित किया बल्कि चुनाव क्षेत्र के सांसदों को भी सम्मिलित किया। यह सब निस्वार्थ सामाजिक सेवा का परिणाम है।

दिसम्बर का महीना स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान का भी महीना है इस लिए स्वामी जी पर भी डा० गंगू ने काफ़ी लम्बा समय लेकर लोगों के सामने उनके द्वारा किये गये कामों को रखा। स्वामी जी ने समाज के लिए जो कुछ किया है उसका बखान तो करते रहेंगे समाप्त नहीं होगा। स्वामी जी ने केवल भारतीय समाज की सेवा में बल्कि संसार के कल्याण के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी।

मौक़े से फ़ायदा उठाते हुए श्रद्धेय श्री रामकरण जोखू द्वारा लिखित दो अंग्रेज़ी पुस्तकों का लोकार्पण किया गया। पहली पुस्तक का अंग्रेज़ी शीर्षक है। 1. The Textbook saving the World from Total decline और 2. Life and Love भाग २.

रामकरण जी अंग्रेज़ी में लिखते हैं पर सेवा हिन्दी के माध्यम से करते हैं। वे नूवेल दे कुर्वेत गुरुकुल आर्यसमाज के वर्तमान प्रधान हैं।

दूसरी पुस्तक जिसका उद्घाटन किया गया वह बहन धनवन्ती पर आधारित है। शीर्षक है, *'एक प्रेरक व्यक्तित्वः श्रीमती धनवन्ती रामचरण।'* यह पुस्तक २६४ पृष्ठों की है। इसके रचयिता डा० उदयनारायण गंगू है। इसमें सात परिच्छेद हैं। प्रत्येक परिच्छेद में एक एक विषय रखा गया है। जैसे वैयक्तिक जीवन, वैवाहिक जीवन, सामाजिक जीवन आदि। पुस्तक में अनेक लोगों के लेख हैं। जैसे बालचन्द तानाकूर, सत्यदेव प्रीतम, डा० रुद्रसेन निऊर, पंडित धर्मेन्द्र रिकाय आदि। उषा शर्मा ने तो प्राक्कथन लिखकर चार चाँद लगा दिये हैं। पुस्तक का प्रकाशन दिल्ली की स्टार पब्लेकेशन से हुआ है। साज-सज्जा सुन्दर है।

सभी दृष्टि से समारोह सफल रहा। लोगों का सत्कार महाप्रसाद से किया गया।

५७ वाँ वार्षिकोत्सव

गत गुरुवार को बड़े दिन के शुभावसर पर आम छुटटी थी। विश्वभर में ईसा मसीह का जन्मे दिन मनाया जा रहा था। मौके से फायदा उठाते हुए, हर साल की तरह, पाई आर्य समाज ने अपनी हिन्दी पाठशाला की ५७ वीं वर्षगाँठ मनायी, वहाँ का आर्य समाज तो लगभग सौ साल का हो गया है ।

खुशी की बात थी कि उक्त समारोह में आर्यसभा के प्रधान श्री बालचन्द तानाकूर के साथ उनके दोनों उपप्रधान डा० उदयनारायण गंगू और सत्यदेव प्रीतम उपस्थित थे।

कार्यारम्भ यज्ञ द्वारा हुआ। यज्ञ समाप्ति पर 'यज्ञ रूप प्रभो' और 'सुखी बसे संसार' का सस्वर गान हुआ, जिसमें पाई आर्य समाज की महिलाओं ने भाग लिया। आशीर्वाद के बाद उनकी गायिकाओं ने तीन भजन गाये। जिन्हें सुनकर सभी उपस्थित श्रोताओं ने भूरि भूरि प्रशंसा की।

रविवार २५ दिसम्बर विशेषकर बच्चों का दिन था। उन्हीं स्कूली बच्चों ने प्रोग्रामों का संचालन किया और उन्हीं के द्वारा विविध प्रोग्राम पेश किये गये । सभी उपस्थित अभिभावकों ने मज़ा लूटा और पसन्द भी किया ।

बच्चों के माता-पिता अच्छी संख्या में उपस्थित थे। किसी भी वक्ता को भी सम्बोधन करने का मौका नहीं दिया गया।

अन्त में श्री सत्यदेव प्रीतम द्वारा अपिल हुआ लोगों ने दिल खोलकर दान दिये। मार्के की बात तो यह थी कि वृद्धाओं ने अपने पेंशन के पैसे से दान दिया। छोटे-छोटे बच्चों ने भी अपने अभिभावकों के साथ छोटी-छोटी रकम दी। बच्चों को आरम्भ से ही दान देने की आदत डालनी चाहिए। आजकल चूंकि फोटो खींचने की सुविधा है। अपने बच्चों को प्रमाणपत्र व पुरस्कार प्राप्त करते हुए फोटो खींचे, जो यादगार के रूप में एक निशानी बनी रहेगी।

अन्त में सभी को जूस और मिठाई से सत्कार किया गया।

हिन्दी दिवस व विश्व हिन्दी दिवस

जिस रफ़्तार से हिन्दी का प्रचार-प्रसार हो रहा है दुनिया भर के विभिन्न देशों में, उसे देखते हुए सहज में ही कहा जा सकता है कि उसे विश्व भाषा बनने में बहुत समय नहीं लगेगा।

पिछले दिनों अनेक देशों में हिन्दी दिवस मनाये गये। शायद पाँचों महा द्विपों के किसी न किसी देश में धूम-धाम से हिन्दी के नाम पर कोई न कोई समारोह अवश्य आयोजित किया गया।

हम कुछ देशों के नाम गिनाते है जहाँ हिन्दी दिवस मनाये गयेः–दक्षिण अमेरिका के कोलोंबिया की राजधानी बोगोता में; अरब खाड़ी के कतार राज्य में, दक्षिण अफ्रीका जोहानेसबर्ग में, श्रीलंका के प्रसिद्ध नगर जाफ़ना में, अरब देश कुवैत में, यूरोप के फ्रान्स देश में, उत्तर अमेरिका में, और कनाडा में जोश के साथ हिन्दी का नाम रोषण किया गया। ओस्ट्रेलिया भी पीछे नहीं रहा।

छोटा भारत कैसे पीछे रह सकता? गत शनिवार ता० १० जनवरी २०१५ को शाम ६.३० बजे, इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र में विश्व हिन्दी सचिवालय के सौजन्य से विश्व हिन्दी दिवस धूम-धाम से मनाया गया, जिसमें मॉरिशस गणराज्य के राष्ट्रपति मान० श्री राजकेश्वर प्रयाग जी०सी०एस०के०, जी०ओ०एस०के० ने मुख्य अतिथि के रूप में अपनी उपस्थिति से कार्य की शोभा बढ़ाई। उसी मौके पर अभीहाल में बनी शिक्षा मंत्री श्रीमती लीला देवी दुःखन लछुमन के साथ उपस्थित थे। भारत के राजदूत महामहिम श्री अनूप मुदगल और अन्य गणयमान्य व्यक्ति उपस्थित थे जिनमें नये कला-संस्कृति मंत्री माननीय श्री बाबू जी भी थे। आर्य सभा के प्रधान, अपने महामंत्री, दो उपप्रधान, मान्य प्रधान और कितने दूर दराज़ गाँव से आये हुए आर्य समाजी उपस्थित थे।

हर साल की तरह विश्व के एक महान हस्ती विशव हिंदी सचिवालय की ओर से आमंत्रित उपस्थित होते हैं। इस साल मोस्कू युनिवर्सिटी रसिया की प्रो० लूदमिला खोखोलोवा आयी हुई थीं।

भाषण के अलावा देशी कलाकारों द्वारा रोचक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। विभिन्न प्रतियोगिताओं अव्वल आये विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। अन्त में एक सुन्दर नाटक भी प्रदर्शित हुआ। हालांकि कार्यक्रम कुछ लंबा हो गया पर रोचक रहा। सभी उपस्थित लोगों की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा।

Simplicity was.... is .... and will always be ...
the highest form of elegance
It is simple to be difficult.... but difficult to be simple...
It costs little to Keep It Simple & Sane.

"Simplicity is the extreme sophistication."

This nugget of wisdom from Leonardo da Vinci is 'a cap which fits all heads' in today's context of celebrations... From the well-off to the underprivileged, no stone is left unturned to put up a show to bid farewell to 2014 and welcome 2015… We let loose our sense of rational thinking…, the "shopping craze" takes control..., the superfluous rules over fundamental needs… parties seem hollow without the booze..., food and drinks really eat out and drink out our health…, crackers and high-powered music creates chaos all around.

The Vedic (universal) way of living

As we bid farewell to the outgoing Gregorian calendar year need to resource our body, mind and spirit. The Vedic hymn: *Om samvatsaro~si parivatsatsaro ~ seedāvatsarosidwatsaro ~si vatsaro~si* || is indeed a pure source of inspiration. As human beings we need to live up to the edicts of Dharma all times. As learned persons we should spend time in an effective and efficient manner, not on futile matters. We should be righteous at the level of thoughts (*manasā*), speech (*vāchā*) and actions (*karmanā*) and discard clutter at all levels. Time follows its cycle…always punctual..., seconds cumulate to minute, hour, day, week, fortnight, month, seasons, year, decade, century, millennium, etc.

The new era would be beneficial to the self and all around us only if we are steadfast on principles. Empowered with a socially responsible, non-discriminatory and non-addictive, lifestyle and attitudes we would experience an enormous increase in faith, truth, happiness, harmony. The end result would be 'quantum leaps' uplift in the physical, moral, intellectual and social welfare of mankind. Our material and spiritual desires would be fulfilled.

The need for a peaceful inner and outer environment

We should consciously learn to withdraw from the world of physical sound, as a start to access the silence within. *Brahma Yajna*, a meditative process *(Sandhya-upāsnā-vidhi)*, is prescribed at twilight (dawn and dusk) to bring us to that inner quietness and discover our real self as well as the Supreme Being. Such daily spiritual practice yield clarity of vision.

Balancing the spiritual self and the practical self

We struggle to satiate the basic physical needs: food, shelter and clothing. We work hard to earn a living, interact with people and situations, pay bills, etc. Spirituality is inherent, natural and vital to humans. "Life" on earth is meant to attain physical and spiritual insight: *"bhoga & apavarga"* (Yog Darshan) and *"abhyudaya & nisreyasa"* (Nyaya Darshan). We shall be the optimum self when both the physical and spiritual self are in harmony. We need to be comfortable in what we are doing.

The thumb rule to harmony

Guilt is always felt on a *post-mortem* basis. We need to listen to our inner self..., look forward to reactions to our actions..., **put our brain into gear before any action...**, a sense of well being and satisfaction indicates that we are on the right track..., if not we need to drop the idea!

Often our ego dominates on logic..., we simply ignore that little inner voice - deeming it as 'foolish'. Yet that 'gut-feel' is our safest bet. As the most faithful friend truest companion, it leads us towards our purpose.

Resolutions for the New Year :

- Be transformative, start with the self and expand this positive attitude and/or energy to our outer environment – family, friends and society at large.
- Refrain from futile spending... dedicate time and money to improve the physical, mental/moral and social standards of the needy.
- Expand our level of awareness and free ourselves from the cacophony clouding festive periods.
- Commit ourselves to human values as the pillars of development.
- Live to the ideals of the universal, evergreen and irrefutable edicts of Dharma: patience, forgiveness, mind-control, non-stealing, hygiene, control of the senses, intellect, knowledge, truth, level-headedness.
- Be caring, compassionate, dedicated, ever ready to stand up for what is just and right.
- Be role models of integrity... noble in thoughts, speech and actions.
- Move hand-in-hand with good and goodness, away from bad and badness.
- Legate the rich heritage of 'the natural way of life, self-discipline, integrity, high character, responsibility, honesty, etc. and never compromise on these ideals' to generations to come.
- Motivate others to come under the umbrella of virtue, i.e. noble character, actions and instinctive qualities
- Build up self confidence, patience and devotion, the hard work and commitment will empower us to tread on the rugged path to progress and success.
- Perceive the precious gift of life and its challenges as positive pinpricks – invigorating, to re-establish the balance on the physical, moral and spiritual planes.

May the All-merciful bestow his blessings upon all for a sparkling future!

Bramdeo Mokoonlall
Darshan Yog Mahaavidyaalaya, Gujarat, India
(on study leave from Arya Sabha Mauritius)

Lala Lajpat Rai - a life sketch

In the British ruled India, in the early 20th century, 'Lal, Bal, Pal' were the three most prominent Hindu Nationalist members. They advocated the Swadeshi Movement, boycotted all imported goods and emphasized on the use of products made in India.

One of the trio, Lala Lajpat Rai was born in Punjab on 28th January,1865. Born 150 years ago Lalaji was referred to 'The Lion of Punjab', 'Punjab Kesari' and 'Sher-E-Punjab'.

Lalaji was a versatile and prolific writer and a politician who is remembered as a leader in the Indian fight for independence. He was severely injured while leading a non-violent protest against the Simon Commission and some weeks after, he passed away. India celebrates his death anniversary every year on 17th November as Martyrs' Day.

Lala Lajpat Rai had his elementary education in the school where his father, Radha Krishan was an Urdu teacher. He joined the Government Higher Secondary School, Lahore to study Law. There he met Lala Hans Raj and Pandit Gurudutt Vidyarthi. They became very close friends and were ardent followers of Arya Samaj founded by Swami Dayanand Saraswati.

Lalaji who was a lawyer by profession , dedicated his entire life in reforming the political and social life of India. He actively took part in politics and brought about reform in the Indian society by preaching the importance of the Vedic Knowledge. He was still a student of Law when he started editing 'Arya Gazette'. He was an excellent orator. He helped in the establishment of DAV school.

He inspired several revolutionaries, namely Rajguru, Sukhdev, Azad and Bhagat Singh.

Zeus Mohabeer

MAKAR SANKRANTI & WITH A LOOK OF DEEP SIGNIFICANCE

S. Bissessur

The principal local event of Makar Sankranti — celebration has now virtually gone global or at least acquired a huge international dimension. "Uttarayana", the festival which coincides with Makar Sankranti January 14-15 annually brings old neighbourhood of Gujarat alive with the big festival of kites. Started in 1989, this important festival has eventually attracted kite flyers from countries as diverse as France, England and Ukraine who fly to India to enjoy the experience as well as to contribute their elaborate "Creating" with the main object of adding an extra dimension to kite flying festival.

Quite earlier, Uttarayana was a harvest celebration and a veneration to the sun. But, even to-day the traditional celebration can be seen in crowded areas of Ahmedabad, Vadodra Surat and other urban centres of Gujarat. As January ushers in, the preparations go in full swing. Children bring a whiff of excitement as they do spend their spare time practising for the big day. "Manjhas"- cotton threads coated with glass, rice paste, chemicals and other abrasive materials to give them the tensile power and strength and that cutting edge are prepared in every street corner, then roll on spools called "Firkis". Artisans fabricate the kites, utilizing bamboo and paper.

In reality, it should be also noted that-Makar Sankranti is a festival based on astronomy. It usually falls on January 14th every year. Many indulge in the erroneous belief that Sankranti augurs the New Year of Hindus. In truth, the Panchang-(Indian Calendar) states that the New Year starts on Chaitra Pratipada or Yugadi festival which marks the creation of the Universe. Chaitra is the first month of the Indian Calendar and Pratipada is the first day of the month.

Makar-is a zodiac sign and Sankranti means evolution/ movement. Primitive India is famous for its eminent astronomers who explored the milky way and other constellations. They were among the first to confirm and affirm that the earth revolves round the sun, from one Rashi (Zodiac Sign) to another. When the revolution starts on Capricorn, the festival of Makar Sankranti is celebrated. The earth revolves for thirty days in this rashi.

There is one Sankranti in each of the twelve rashis annually. The twelve rashis have been named as follows : Mesha (Aries), Vrish (Taurus), Mithun (Gemini), Karka (Cancer), Singh (Leo), Kanya (Virgo), Tula (Libra), Vrishchick (Scorpion),Dhanu (Sagitarius), Makar (Capricorn), Kumba (Aquarius), and Mina(Pisces). Why is it that only Makar Sankranti is celebrated?

Makar Sankranti marks the shift from Dakshinayan to Uttarayan, a period of intensive light. Makar Sankranti is also celebrated to mark the Saur Varsha/ Solar Year. Sages have prescribed prayers to celebrate festivals. Rejoicing comes later. The Veda states that God (the Supreme Creator, Operator and Dissolver of the Universe) through his power controls the sun, the very wheel of time and dime. He controls each and every minute, hour, second, day, week, fortnight, month, year and season. He is the only one worthy of worship.

Makar Sankranti relates to the sun and the very movement of the earth. The grace of God is invoked through fervent prayers so that everyone may be blessed with a good and favourable time, a time without excessive heat or cold.

Many seize this glorious and golden opportunity to indulge in multifarious and perfect practices. A bathing at the confluence of the rivers, Ganga, Yamuna and the invisible Saraswati in Allahabad at the very crack of the dawn on Makar Sankranti.

The use of Sesame in Savouries is another popular event. Wearing new clothes and spending the whole day to visit family members, friends and relatives is a customary and traditional event.

Sankranti is also known as the "Khichri" festival in the north of India. **"Kichri"** and sesame, including sweet meals energise the whole body. Families also remember those who have left the fold and assert new ties with others within the network of social and economic relation. It is also customary in some regions to offer gifts to parents, friends and relatives on this auspicious occasion.

In certain regions of India, the veneration of cows is a main feature in the celebration of Makar Sankranti. Bulls and Cows are properly bathed and their horns painted, decorated with beautiful and fascinating flower garlands and tinkling bells, these animals are then taken out in the villages and towns as well.

Kite flying is eventually another feature of this festival. The brilliant colours signify hope, its size in relation to the sky epitomizes and symbolizes the minuteness of man in front of the Almighty and its thread reminds us that the rope of our life is being controlled by the Almighty / God. If it lets go the rope, we will certainly meet our end. In this very context , William Shakespeare has so aptly and appropriately pointed out:-

" As flies to wanton boys-
Are we to God. God kills us for his sport."

By way of conclusion, it goes without saying that festivals are not just feasts and worship. They do also act as social cement which brings people together in total harmony and strengthen brotherhood , love, peace, mutual respect and mutual understanding. The close observance of festivals has always symbolized and epitomized the fundamental values of life. Festivals are also happy occasions that enrich social life. Their celebrations also rejuvenate congenial relationships with the family and society.

Makar Sankranti is also loaded with multifarious messages. If one understands its messages, one's life will be more meaningful.

HAPPY & JOYFUL MAKAR SANKRANTI TO ONE AND ALL

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1,Maharshi Dayanand St., Port Louis,
Tel : 212-2730, 208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी., ओ.एस.के., आर्य रत्न
सह सम्पादक : श्री सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए.,ओ.एस.के,सी.एस.के.,आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, *पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा, *पी.एम.एस.एम*
Printer : BAHADOOR PRINTING LTD.
Ave. St. Vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038

तर्ज़ -- कजरा मुहब्बत वाला

बि. बिसेसर

यज्ञ रचाने वाला, वेद पढ़ाने वाला
सब का है दाता भगवान, माने न माने इंसान
रंग रंग के फूल खिलाए, सूरज और चाँद बनाए
सागर धरती और आसमान, माने न माने इंसान
आँखें ना हाथ उसके, ना कोई आकार देखो
ना ही औजार कोई, ना कोई आधार देखो
फिर भी यह सुन्दर रचना अद्‌भुत संसार देखो
पतझड़ खिलाने वाला, बादल बरसाने वाला
सब का दाता भगवान, माने न माने इंसान
चलती ना रिश्वतखोरी, उसके दरबार कोई
अपना बेगाना उसका, ना रिश्तेदार कोई
सुनता है वे तो सब को कर ले पुकार कोई
सज्जन को हँसाने वाला, दुर्जन रुलाने वाला
सब का है दाता भगवान, माने न माने इन्सान
निर्जन भयानक वन से चाहो गर पार जाना
तप और शक्ति के हार मुक्ति के हार जाना
पथिक मंजिल से पहले हिम्मत न हार जाना